विश्व परिदृश्य और हिंदुत्व के समक्ष चुनौतियाँ

– अनिल चावला

आम बोलचाल की भाषा में हिंदुत्व को हिंदु धर्म के राजनैतिक विस्तार के रूप में समझा जाता है। हिंदुत्व शब्द का प्रचलन पिछले दो–तीन दशकों की देन है। इसे प्रचलन में लाने का श्रेय इसके ध्वजवाहकों (संघ परिवार) के साथ–साथ उनके आलोचकों को दिया जा सकता है। इस शब्द को बहुत ढीले–ढाले ढंग से प्रयोग किया जाता है। हिंदुत्व के ध्वजवाहकों के लिये हिन्दुत्व का अर्थ वे मुद्दे हैं जिन्हें लेकर वे निरंतर आंदोलन करते रहे हैं – धारा 370, समान आचार संहिता, राम मंदिर एवं संभवतः एक या दो अन्य भी।

ये सभी मुद्दे एक विशाल ऐतिहासिक प्रयास का अंग हैं। इस्लाम को मजहब कहा जाता है, पर सच्चे अर्थों में इस्लाम एक साम्राज्यवादी राजनैतिक सैलाब है। इस्लाम अपने विस्तारवादी एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए जिस क्रूरता और निर्ममता का प्रयोग करता है, उसकी कल्पना मात्र ही भयावह है। इस्लाम के विस्तार को उत्तर में यूरोप में ईसाईयों द्वारा रोका गया और पूर्व में भारत में हिंदुओं ने अनेक युद्ध हारने के पश्चात भी काफी हद तक रोका। चीन ने भी इस्लाम को रोकने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। भारत में मुगल एवं अन्य मुसलमान शासकों के कमजोर होने पर अंग्रेजों ने धीरे–धीरे सत्ता पर कब्जा किया। एक छोटे से द्वीप से आने के कारण उन्हें यूरोपीय और विश्व इतिहास की कोई समझ नहीं थी। उन्होंने हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों को एक तराजू पर तोला और अपने तात्कालिक स्वार्थों के लिए इस्लामी विचारों को प्रोत्साहन और समर्थन भी दिया। इसी नीति का परिणाम पाकिस्तान था। आज यदि पाकिस्तान संपूर्ण विश्व के लिए एक सिरदर्द बन गया है तो इसके लिए हम अंग्रेजों में इतिहासदृष्टि के अभाव को निश्चय ही जिम्मेदार ठहरा सकते हैं। अंग्रेजों की एक ऐतिहासिक भूल का दुष्परिणाम आज पूरा विश्व भुगत रहा है।

अंग्रेजों द्वारा अज्ञानतावश इस्लामी विस्तारवाद को हवा देने के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम के राजनैतिक स्वरूप की जड़े मजबूत हुई। उभरते राजनैतिक इस्लाम का विरोध करने

© All Rights Free

के लिए मैदान में केवल हिंदू संगठन थे। दुर्भाग्यपूर्ण तो यह था कि स्वतंत्रतापूर्व इन हिंदू संगठनों पर अंग्रेजों ने अत्याचार किए और आजादी के पश्चात काँग्रेस सरकारों ने हिंदू संगठनों को प्रताड़ित किया। अत्याचारों एवं प्रताड़ना की यह गाथा पिछले डेढ़ सौ वर्षों से चल रही है। इन विपरीत परिस्थितियों में स्वयं के अस्तित्व को कायम रखते हुए हिन्दू संगठनों ने विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से इस्लामी विस्तारवाद के विरूद्ध अपना विरोध दर्ज कराने का प्रयास किया। चाहे काश्मीर का विषय हो, चाहे समान आचार संहिता का, चाहे अयोध्या में मंदिर का – ये सभी प्रतीक मात्र हैं। आक्रामक इस्लामी विस्तारवाद और उसके प्रति सहानुभूति रखने वाले सत्ताधीशों के सम्मुख विरोध के इन प्रतीक चिन्हों को लेकर खड़े होने हेतु जिस अदम्य साहस का परिचय दिया गया वह निश्चय ही प्रशंसनीय है।

परन्तु इन साहसपूर्ण प्रयासों के पीछे एक खतरा छिपा है – मूर्ति को ही भगवान मान लेने का। आज बहुत से हिंदू संगठन हिंदू राजनैतिक विचारधारा को कश्मीर, समान आचार संहिता और राम मंदिर का पर्याय मानते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि वास्तविक युद्ध तो इस्लामी विस्तारवाद के विरूद्ध है और ये तीनों महत्त्वपूर्ण होने के बावजूद उस विशाल विश्वव्यापी महायुद्ध के छोटे–छोटे अंग ही हैं।

आज विश्व के अधिकतर भागों में इस्लामी विस्तारवाद के खतरे के प्रति चेतना जाग्रत हो रही है। आतंकवाद तो इस्लाम के विस्तारवादियों द्वारा अपनाया गया युद्ध का एक तरीका मात्र है। अंतर्राष्ट्रीय मंचों से आतंकवाद के विरूद्ध तो आवाज उठ रही है पर असली शत्रु इस्लामी विस्तारवाद के विरूद्ध अभी भी खुले रूप से बोलने का साहस दिखाई नहीं दे रहा। एक ओर यूरोप एवं अमेरिका का सामान्य जन और बुद्धिजीवी वर्ग दबी जबान में, गुपचुप रूप से, बंद कमरों में इस्लाम के आक्रामक फैलाव पर चिंता व्यक्त कर रहा है, दूसरी और विस्तारवादी मुसलमान खुलेआम जंग का ऐलान कर रहे हैं। ब्रिटेन में शरीयत कानून को मान्यता देने की बात चल रही है, फ्रांस में कई इलाकों में बिना सिर ढके औरत कदम नहीं रख सकती, हेडली उर्फ दाऊद गिलानी जैसे लोग अमरीका में इस्लामी राज्य स्थापित करने के लिए प्रयासरत हैं। जैसे–जैसे इस्लामी विस्तारवाद अपना नकाब उतार कर अपना असली रंग–ढंग दिखाने लगा है, बाकी विश्व मजबूर होकर अनमने भाव से ही सही इस महायुद्ध के लिए तैयार होने लगा है।

© All Rights Free

विश्वव्यापी महायुद्ध को कोई स्वीकार करें या ना करें, इसका उद्घोष हवा में प्रतिदिन गूँज रहा हैं। इस महायुद्ध के वातावरण में पुराने प्रतीकात्मक विरोध निरर्थक प्रतीत होने लगे हैं। ऐसा नहीं है कि पुराने प्रतीकों का महत्व समाप्त हो गया है। सत्य यह है कि वे अभी भी महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु अपर्याप्त हैं। विश्व की हिंदू धर्म, परंपरा एवं विचारकों से बहुत अधिक अपेक्षाएं हैं। आज से पाँच दशक पूर्व हिंदू संगठनों के लिए प्रतिसुरक्षात्मक या प्रतीकात्मक विरोध पर्याप्त था। उस समय हिंदू विचारधारा की विश्व दृष्टि की बात करना हास्यास्पद प्रतीक हो सकता था। परन्तु आज समय बदल गया है।

विश्व के अनेक चिंतक, विचारक, इतिहासज्ञ यह मानने लगे हैं कि ई0 1000 के पूर्व हिंदू धर्म लगभग पूरे विश्व में फैला था। सम्पूर्ण एशिया, यूरोप, अमरीका और अफ्रीका के अधिकतर भागों में जो धार्मिक आस्थाएं एवं मान्यताएं थी वे हिन्दू धर्म से मिलती जुलती थीं। सहस्राब्दी के प्रारंभ में ही भारत को पहली बार मुस्लिम आक्रमणकर्ता से हार का सामना करना पड़ा था। उसी के कुछ समय बाद यूरोप में कुछ लुटेरों ने विजय प्राप्त की। इन लुटेरों ने जीते हुए देशों पर अपना प्रभुत्व कायम रखने के लिए चर्च का सहारा लिया। जर्मनी, फ्रांस, इंगलैंड, रूस, स्विटजरलैंड, स्पेन, पुर्तगाल सभी का ईसाईकरण ई0 1000 के बाद तलवार के दम पर नितांत क्रूरता और निर्ममता से किया गया। अमरीका एवं अफ्रीका में यही प्रक्रिया बाद में दोहराई गयी। पिछली सहस्राब्दी में एक ओर चर्च समर्थित साम्राज्यवाद ने कहर ढाया तो दूसरी ओर लगभग यही कार्य इस्लामी आक्रमणकर्ताओं ने किया। इन दोनों एकल–पुस्तक आधारित साम्राज्यवादी मज़हबों ने मानवता को पिछली सहस्राब्दी में जितना लहुलूहान किया उसका वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं है। ये दोनों जहाँ भी गये वहाँ की मूल सभ्यता, धर्म, और जीवनशैली को पूरी तरह नष्ट कर उसका नामोनिशान तक मिटाने का प्रयास किया। यूरोप में विज्ञान के उदय के साथ ईसाई वहशीपन पर कुछ अंकुश लगा। यूरोप में स्वतंत्रता की लहर चर्च के तानाशाही शिकंजे से स्वतंत्रता थी। पिछली कुछ पीढ़ियों ने इस स्वतंत्रता के नाम पर स्वछंदता को भोगा। पर अब इस स्वछंदता से ऊब और परेशानी होने लगी है। ऐसे में पूरे यूरोप में ईसाईकरण के पूर्व के उनके मूल धर्म के प्रति व्यापक स्तर पर रूचि जाग्रत हुई है। इन मूल धर्मों का वहाँ पैगन कहा जाता है। जैसे– जैसे पैगन आस्थाओं के बारे में समझ विकसित हो रही है, यह स्पष्ट होने लगा है कि सभी पैगन आस्थाओं के मूल में हिंदू जीवनशैली, विचार और आध्यात्म है। सत्य यह है कि आज

© All Rights Free

जिसे हम हिंदू धर्म के रूप में भारत और भारतवंशियों में देखते हैं वह उस विशाल वटवृक्ष का एक छोटा सा भाग मात्र है। ई0 1000 के पूर्व इस वटवृक्ष के अनगिनत तने थे। यह वटवृक्ष पूरे विश्व में फैला था और प्रत्येक भूभाग से यह वैसे ही जुड़ा था जैसे यह वहीं उगा हो। एकल–पुस्तक आधारित साम्राज्यवादी मज़हबों ने हर तने को काटकर उखाड़ फेंका, केवल भारतवर्ष में वे सफल नहीं हो पाए।

जिन तनों को उन दानवों ने समूल उखाड़ फेंका था, उन्हीं की जड़ों क बचे खुचे अवशेषों से अब कोपलें फूटने लगी हैं। चर्च समर्थित साम्राज्यवाद की कमर टूट चुकी है। आज से लगभग चार शताब्दी पूर्व उसने इस्लामी विस्तारवाद का सफलतापूर्वक दक्षिण यूरोप में सामना किया था। अब भी वह इस्लामी विस्तारवाद के सम्मुख खड़े होने का प्रयास तो कर रहा है। पर यह एक थके हुए बूढ़े आदमी का प्रयास है।

इस्लामी विस्तारवाद का मुकाबला करने की ताकत न तो रक्तरंजित हाथों वाले बूढ़े चर्च में है, न ही पराजित साम्यवाद में, न ही अंतिम साँसें ले रह लोभ और लालसा आधारित पूँजीवाद में है। यह भी समझना आवश्यक है कि इस्लामी विस्तारवाद को बंदूकों, मिसाइलों और बमों से नहीं

© All Rights Free

रोका जा सकता है। इस्लामी विस्तारवाद को मन और मस्तिष्क के स्तर पर हराना आवश्यक है। इस हेतु एक ऐसे धर्म की पुनःस्थापना करनी होगी जो शोषण आधारित नहीं हो, जो विश्व के प्रत्येक भूभाग में मूल धर्म हो, जिसके जीवन मूल्य शाश्वत हों, जो प्रकृति से एकात्मता स्थापित करे, जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन को भौतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाए।

विश्व के प्रत्येक भाग में इस प्रकार के धर्म की पुनःस्थापना करना ही हिंदुत्व का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदुत्व के ध्वजवाहक अपनी वैश्विक और ऐतिहासिक भूमिका को समझें। उन्हें अपनी स्थानीय सोच के संकुचित दायरों से निकल कर अपनी दृष्टि को विकसित करना होगा। इस्लामी विस्तारवाद के सैलाब को रोकने के लिए प्रतिरक्षात्मक और प्रतीकात्मक विरोधों से ऊपर उठकर एक सक्रियात्मक वैश्विक भूमिका अपनानी होगी। हिंदुत्व के सम्मुख यही सबसे बड़ी चुनौती है।

अनिल चावला
25 नवम्बर, 2009

© All Rights Free